श्री साई चालीसा

सरलार्थ सहित

राकेश मोहन कौशिक

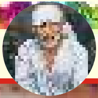

श्री गुरुचरण का कर के सुमिरन।
साई के जस का करूँ मैं बरणन।
जय जय साई, हे जगदीश्वर।
कृपा करो तुम, हे परमेश्वर।

मैं श्री गुरुदेव के चरणों का स्मरण कर के साई बाबा के यश का वर्णन करता हूँ। हे साई! आपकी जय हो। हे जगत के स्वामी! आपकी जय हो। हे परमेश्वर! मुझ पर कृपा कीजिए।

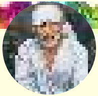

जय साई जय, जय दुखभंजन।
जय भवमोचन, जय भवभंजन।1।

हे दु:खों को दूर करने वाले साई! आपकी जय हो। हे परमपिता परमात्मा! हे भवबाधा हरने वाले साई! आपकी जय-जयकार हो।

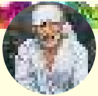

दीन दुखी के पालनहारे।
शरणागत के तारणहारे।2।

आप दुःखी एवं संतप्त प्राणियों के पालनहार हैं। अपनी शरण में आने वालों का कल्याण करते हैं।